श्री शिव चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन,
मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम,
देहु अभय वरदान॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरजापति दीन दयाला,
सदा करत सन्तन प्रतिपाला।

भाल चन्द्रमा सोहत नीके,
कानन कुण्डल नागफनी के।

अंग गौर शिर गंग बहाये,
मुण्डमाल तन क्षार लगाए।

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे,
छवि को देख नाग मन मोहे।

मैना मातु कि हवे दुलारी,
बाम अंग सोहत छवि न्यारी।

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी,
करत सदा शत्रुन क्षयकारी।

नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे,
सागर मध्य कमल हैं जैसे।

कार्तिक श्याम और गणराऊ,
या छवि को कहि जात न काऊ।

देवन जबहीं जाय पुकारा,
तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा।

किया उपद्रव तारक भारी,
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।

तुरत षडानन आप पठायउ,
लव निमेष महँ मारि गिरायउ।

आप जलंधर असुर संहारा,
सुयश तुम्हार विदित संसारा।

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई,
सबहिं कृपा कर लीन बचाई।

किया तपहिं भागीरथ भारी,
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी।

दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं,
सेवक स्तुति करत सदाहीं।

वेद नाम महिमा तव गाई,
अकथ अनादि भेद नहिं पाई।

प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला,
जरे सुरासुर भये विहाला।

कीन्हीं दया तहं करी सहाई,
नीलकण्ठ तब नाम कहाई।

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा,
जीत के लंक विभीषण दीन्हा।

सहस कमल में हो रहे धारी,
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।

एक कमल प्रभु राखेउ जोई,
कमल नयन पूजन चहं सोई।

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर,
भए प्रसन्न दिए इच्छित वर।

जय जय जय अनन्त अविनाशी,
करत कृपा सब के घटवासी।

दुष्ट सकल नित मोहि सतावै,
भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै।

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो,
येहि अवसर मोहि आन उबारो।

लै त्रिशूल शत्रुन को मारो,
संकट से मोहि आन उबारो।

मात-पिता भ्राता सब होई,
संकट में पूछत नहिं कोई।

स्वामी एक है आस तुम्हारी,
आय हरहु मम संकट भारी।

धन निर्धन को देत सदाहीं,
जो कोई जांचे सो फल पाहीं।

अस्तुति केहि विधि करैं तुम्हारी,
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।

शंकर हो संकट के नाशन,
मंगल कारण विघ्न विनाशन।

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं,
नारद शारद शीश नवावैं।

नमो नमो जय नमः शिवाय,
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय।

जो यह पाठ करे मन लाई,
ता पर होत हैं शम्भु सहाई।

ऋनियां जो कोई हो अधिकारी,
पाठ करे सो पावन हारी।

पुत्रहीन इच्छा कर जोई,
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।

पंडित त्रयोदशी को लावे,
ध्यान पूर्वक होम करावे।

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा,
ताके तन नहीं रहै कलेशा।

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे,
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे।

जन्म जन्म के पाप नसावे,
अन्त धाम शिवपुर में पावे।

कहै अयोध्यादास आस तुम्हारी,
जानि सकल दुःख हरहु हमारी।

॥ दोहा ॥

नित्त नेम कर प्रातः ही,
पाठ करौं चालीसा।
तुम मेरी मनोकामना,
पूर्ण करो जगदीश॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु,
संवत चौसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि,
पूर्ण कीन कल्याण॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘‍♂️, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल